टिंग्या

ओजस

महाराष्ट्र की जुन्नर तहसील में एक गाँव है - राजुरी। टिंग्या इसी गाँव के एक गरीब किसान का बेटा है। उम्र होगी यही कोई 8-9 साल। टिंग्या के परिवार की स्थिति वैसी ही है जैसी आज महाराष्ट्र, आन्ध्रप्रदेश के अधिकतर किसानों की है। इनके बारे में तुमने अखबारों या न्यूज़ चैनल में देखा-पढ़ा होगा। टिंग्या का परिवार साहूकार के कर्ज़ में डूबा हुआ है। और ऊपर से बारिश ना होने के कारण ठीक से अनाज पैदा नहीं हो रहा है। बीज बोने के लिए साहूकार और पैसे नहीं दे रहा है। पहला कर्ज़ चुका ना पाने के कारण टिंग्या के पिता को साहूकार और गाँव के अमीर लोगों से बुरा-भला सुनना पड़ रहा है। इतना सब होने के बावजूद वे दुखी नहीं हैं... हार कर नहीं बैठे हैं। वे परिस्थितियों से लड़ रहे हैं। अच्छी ज़िन्दगी के लिए लगातार कोशिश कर रहे हैं। एक दूसरे से जुड़े हुए हैं।

उसी परिवार का एक और सदस्य है - चितंग्या। चितंग्या और टिंग्या की बहुत बनती है। वे बहुत अच्छे दोस्त हैं। चितंग्या टिंग्या से दो महीने छोटा है। दोनों साथ-साथ भाइयों जैसे पले-बढ़े हैं।

एक रात खेत से आते वक्त चितंग्या एक गड्ढे में गिर जाता है। बड़ी मुश्किल से उसे बाहर निकाला जाता है। वो बुरी तरह से घायल है। उसकी एक टाँग टूट गई है। अब वो हल नहीं खींच सकता है। पूरा परिवार रात-रात जागकर उसकी देखभाल करता है। टिंग्या चितंग्या के साथ ही बाहर सोता है।

टिंग्या के पिता कारभारी को आलू बोने हैं। पहली फसल बर्बाद हो गई थी। पर अब हल कौन चलाएगा? ना तो साहूकार नए बैल के लिए पैसे दे रहा है। ना ही रिश्तेदार ट्रैक्टर दे रहे हैं। अब कारभारी के सामने एक ही विकल्प है - बैल बेचना। जब तक चितंग्या नहीं बेचेंगे दूसरा बैल कहाँ से आएगा? हल कैसे चलेगा तो फसल कैसे बोई जा सकेगी? फसल नहीं बोई गई तो परिवार कैसे चलेगा? साहूकार गला पकड़ लेगा। सबसे बुरी बात तो यह कि चितंग्या अब खेती के काम नहीं आ सकता इसलिए अब उसे कसाई को ही बेचा जा सकता है।

टिंग्या के पड़ोस में रशीदा का परिवार रहता है। वो भी टिंग्या की अच्छी दोस्त है। दोनों साथ खेलते हैं। रशीदा की बूढ़ी दादी है, जो अब काफी बीमार रहती हैं। एक रात उनका पैर फिसलता है और वे बिस्तर पकड़ लेती हैं। उनका एक पड़ोसी कर्ज़ में इतना डूबा है कि एक दिन खुदकुशी कर लेता है। पूरे गाँव की हालत भी लगभग ऐसी ही है।

एक बार शाम के वक्त टिंग्या घर की दहलीज़ पर बैठा था। उसकी माँ पानी भरकर अन्दर आती हैं और बोलती हैं, "टिंग्या, शाम को लक्ष्मी के आने के समय दहलीज़ पर नहीं बैठते।"

वो पूछता है, "क्या कहती हो माँ? क्या लक्ष्मी आ भी रही है?" इस सवाल पर माँ के पास सिवा चुपचाप अन्दर जाने के कोई चारा नहीं बचता।

इसी तरह के सवाल टिंग्या चितंग्या के बारे में भी करता है। टाँग टूटने के कारण एक तरफ तो हम चितंग्या को मार रहे हैं, फिर दूसरी तरफ रशीदा की दादी को दवाइयाँ दे दे कर ज़िन्दा रखने की कोशिश क्यों की जा रही है? टिंग्या नहीं मान सकता कि जानवरों पर इन्सानों से अलग नियम लागू हो सकते हैं। जब तक चितंग्या ठीक था वो टिंग्या के भाई जैसा था और अब वो सिर्फ एक नाकाम जानवर कैसे बन गया? इस तरह के नियम कौन बनाता है?

इन सवालों के जवाब टिंग्या को आखिर तक नहीं मिलते। उसकी माँ टिंग्या के सवालों को समझ सकती है। लेकिन इन्सान द्वारा बनाए नियमों पर चलने के अलावा उनके पास कोई विकल्प नहीं बचता। टिंग्या चितंग्या को बिकने से बचा नहीं पाता। चितंग्या कसाई के हाथ चला जाता है। पूरा परिवार दुखी होता है।

इसी दौरान उनकी गाय एक बछड़ा जनती है। टिंग्या उसका नाम चितंग्या रखता है।

धीरे-धीरे टिंग्या बड़ा होने लगता है। वो समझने लगता है कि बुढ़ापे और मौत पर सवाल नहीं पूछे जा सकते हैं। जानवरों का जीवन और इन्सानों के जीवन की तुलना नहीं की जा सकती। ज़िन्दगी का मतलब नई पैदाइश भी है। एक चीज़ खत्म होने पर ज़िन्दगी खत्म नहीं होती। ज़िन्दगी चलती रहती है।

निर्देशक मंगेश हाडवले की यह पहली फिल्म है। इसके कलाकार कभी किसी अभिनय स्कूल में नहीं गए। बल्कि वह गाँव के ही लोग हैं। शरद गोयकर ने टिंग्या की भूमिका निभाई है। वे खुद ऐसे ही किसान परिवार से हैं। पूरी फिल्म टिंग्या और रशीदा (तरन्नुम पठान) ने खड़ी की है। इस फिल्म को तथा अभिनय के लिए शरद गोयकर को कई राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय अवार्ड मिले।

इस फिल्म में ना तो बड़े-बड़े संवाद हैं और ना ही आँखों से पानी निचोड़ने वाले दृश्य। फिर भी फिल्म को लोगों ने बहुत पसन्द किया है। उन्हें सोचने पर मजबूर किया है कि बावजूद इतनी तकलीफों के कैसे टिंग्या और उसका परिवार अपनी ज़िन्दगी और चेहरे की मुस्कुराहट बरकरार रखते हैं। और जो अपने देश के हर गाँव के परिवार में दिखता है।

अक्सर मान लिया जाता है की पढ़ाई-लिखाई से, उम्र बढ़ने से, अनुभवों से इन्सान के तर्क सही होते जाते हैं। जबकि शायद सच तो यह है कि कई बार बच्चों के सवालों के जवाब तो तर्क से दिए ही नहीं जा सकते। बच्चों के सवालों का उल्टा-पुल्टा जवाब देकर टाल दिया जाता है या उसका मज़ाक उड़ाकर सवाल को ही नकार दिया जाता है। धीरे-धीरे सवाल जब खत्म होने लगते हैं तब माना जाता है कि बच्चा अब बड़ा हो गया है।

मेरा पन्ना

अनु डामोर, तीसरी, इन्दौर, म.प्र.